Indian J. Soc. & Pol. 09 (02) : 127-132: 2022 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JULY 2022 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

गोरखपंथ के आलोक में भारत एवं नेपाल सम्बन्ध

रीतेश साह[1], प्रमोद[2]

[1]सहायक निदेशक, यूजीसी–मानव संसाधन विकास केंद्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत
[2]शोध छात्र,डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

ABSTRACT

भारत की उत्तरी सीमा पर महान हिमालय की उपत्यका में नेपाल भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश होने के साथ सांझी सांस्कृतिक परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन काल से प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण यह हिमालयी भू–भाग में तपस्यियों एवं सन्यासियों को आकर्षित कर उनकी तपस्थली के रूप में प्रसिद्व रहा है। भारत से बड़ी संख्या में तपस्वी भारत के हिमालयी भू–भाग व नेपाल में अपनी तपस्या के लिए जाया करते थे। वास्तव में प्राचीन काल से ही भारत एवं नेपाल के मध्य किसी प्रकार की भिन्नता के दर्शन नहीं होते हैं। भारतीय क्षेत्र में विकसित विभिन्न धार्मिक संप्रदायों ने नेपाल के जनमानस को प्राचीनकाल से ही प्रभावित करने का कार्य किया। भारत में उत्पन्न बौद्ध धर्म का प्रभाव नेपाल में अप्रतिम रूप से दिखाई देता है।

KEYWORDS : *संत साहित्य, मत, पंथ, गोरखपंथ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध*

भारत की उत्तरी सीमा पर महान हिमालय की उपत्यका में नेपाल भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश होने के साथ सांझी सांस्कृतिक परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीन काल से प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण यह हिमालयी भू–भाग में तपस्यियों एवं सन्यासियों को आकर्षित कर उनकी तपस्थली के रूप में प्रसिद्व रहा है। भारत से बड़ी संख्या में तपस्वी भारत के हिमालयी भू–भाग व नेपाल में अपनी तपस्या के लिए जाया करते थे। वास्तव में प्राचीन काल से ही भारत एवं नेपाल के मध्य किसी प्रकार की भिन्नता के दर्शन नहीं होते हैं। भारतीय क्षेत्र में विकसित विभिन्न धार्मिक संप्रदायों ने नेपाल के जनमानस को प्राचीनकाल से ही प्रभावित करने का कार्य किया। भारत में उत्पन्न बौद्ध धर्म का प्रभाव नेपाल में अप्रतिम रूप से दिखाई देता है।

भारतीय भौगोलिक परिवेश से जुडा हुआ नेपाल अपनी राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में भारतीय परिदृश्य से बहुत भिन्न नही था। नाथपंथ के लिए हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र के रुप में विकसित हो रहा था। नाथ संप्रदाय अथवा गोरखपंथ का नेपाल में पल्लवन इसी कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। भारत में नाथ संप्रदाय की स्थापना 11वीं शताब्दी के मध्य मानी जाती है। गुरू गोरखनाथ के द्वारा इस संप्रदाय को सुसंगठित करने का कार्य किया गया। नाथ परम्परा के आदि संस्थापक आदिनाथ अर्थात भगवान शिव को माना जाता है। इस परम्परा में द्वितीय गुरू मत्स्येंद्रनाथ को माना जाता है। गुरू गोरखनाथ इस परम्परा के तृतीय गुरू थे। गुरू मत्स्येंद्रनाथ एवं गुरू गोरखनाथ का प्रभाव क्षेत्र भारत के बाहर नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान इत्यादि क्षेत्रों तक विस्तृत था। भारत एवं नेपाल के मध्य की भौगोलिक स्थिति के कारण सांस्कृतिक एवं सामाजिक के साथ राजनीतिक स्तर पर भी एक प्रभावी सम्बन्ध दिखाई देता है।

नेपाल का प्राचीन राज्य गंडक तथा कोसी नदियों के मध्य स्थित था, जिसमें वर्तमान समय के नेपाल की घाटी का क्षेत्र सम्मलित था। भारत एवं नेपाल के सम्बन्धों का प्रमाणिक इतिहास लिच्छिवियों के शासन काल से प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में हुआ था, जो कि दक्षिण मध्य नेपाल में स्थित था। मौर्यकाल में नेपाल का तराई क्षेत्र मौर्य के अन्तर्गत थी, परन्तु इसी समय से नेपाल की घाटी में स्वतंत्र सत्ता के प्रमाण प्राप्त होते हैं। नेपाल के साथ अशोक के सम्बन्ध बहुत ही मैत्रीपूर्ण थे। नेपाली परम्परा के अनुसार अशोक की एक पुत्री चारुमती का विवाह यहं के क्षत्रिय देवपाल के साथ हुआ था। अशोक ने नेपाल में अनेक बौद्ध स्तूप एवं चौत्यों का निर्माण करवाया था। (विद्यालंकार, 2017, 487) इस प्रकार भारत एवं नेपाल के सांस्कृतिक सम्बन्धों में एक अविच्छिन्न परम्परा का प्रारम्भ हुआ, जो कि 21 वीं शताब्दी तक प्रचलन में है।

भारत में प्रचलित विभिन्न धार्मिक संप्रदायों में नाथपंथ की भूमिका को एक युगान्तकारी घटना के रुप में माना जाता है। नाथ पंथ का संस्थापक आदिनाथ को माना जाता है। गोरखनाथ के द्वारा इसकों एक निश्चित एवं संगठित स्वरुप प्रदान किया गया। गोरक्षनाथ के अनुयायियों को योगी, गोरखनाथी, दर्शनी एवं कनफटा इत्यादि नामों से जाना जाता है। इन विभिन्न नामों के पीछे प्रत्येक नाम के साथ एक स्पष्ट परम्परा जुड़ी हुई है। योगी नाम मूल रुप से हठयोग के पारस्परिक साधकों की ओर संकेत करता है। गोरखनाथी नाम इस पंथ के संस्थापक के नाम पर मिलता है। (राघव, रांगेय 2017, 24) ब्रिग्स ने अपनी पुस्तक गोरखनाथ ऐंड दी कनफटा योगीज में इन विभिन्न नामों का उल्लेख किया है। सिद्धमत, अवधूत योगी, नाथयोगी, योगी एवं जोगी, कनफटायोगी, योगमार्ग तथा नाथपंथ प्रमुख है।

1: Corresponding Author

(उपाध्याय, बलदेव, 1999)।

गोरखपंथ के संस्थापक गुरू गोरखनाथ तथा उनके गुरू महायोगी मत्स्येंद्रनाथ का नेपाली जनमानस में महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। नेपाल में योगी मत्स्येंद्रनाथ के समय से ही योग परम्परा का प्रभाव दिखाई देता है। नेपाल के सामाजिक जीवन में मत्येन्द्रनाथ को महत्वपूर्ण सम्मान प्राप्त है। मत्स्येन्द्र यात्रा उत्सव नेपाली लोक परम्परा का एक महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। मत्स्येंद्रनाथ ने ही सर्वप्रथम नेपाल की जनता को योगामृत प्रदान किया। नेपाल की सामाजिक परम्परा में यह उक्ति प्रचलित है कि मत्स्येंद्रनाथ के समकालीन शासक ने मत्स्येन्द्रनाथ के अनुयायियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए। इससे अप्रसन्न होकर उनके शिष्य गुरू गोरखनाथ काठमाण्डू के मृगस्थली में नवनागों को समेटकर बैठ गए, इसका परिणाम यह हुआ कि नेपाल में वर्षा बन्द हो गई। गुरू गोरखनाथ के बारह वर्षो तक ध्यानस्थ रहने के कारण नेपाल में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई। गुरू मत्स्येंद्रनाथ की कृपा से यह अकाल समाप्त हुआ। इसी के उपलक्ष्य में नेपाल की जनता मत्स्येंद्र यात्रा उत्सव मनाती है। इसी प्रकार की अनुश्रुति नेपाली बौद्ध साहित्य में भी प्राप्त होता है। नेपाली बौद्ध साहित्य में मत्स्येंद्रनाथ को अवलोकितेश्वर कहा गया है। (योगवासी, 1990, 208) विभिन्न जनाश्रुतियां इस बात का प्रमा ा है कि नेपाली समाज में मत्स्येंद्रनाथ को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है।

नाथपंथ के वास्तविक संस्थापक महायोगी गोरखनाथ की पूजा नेपाल में शिव गोरक्ष के रूप में की जाती है। उन्होने अपनी साधना एवं तपस्या के माध्यम से नेपाली जनजीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करने का कार्य किया। नेपाल के सांस्कृतिक परम्परा एवं लोकजीवन के विविध आयामों में गुरू गोरखनाथ का अमिट प्रभाव दिखाई देता है। नेपाल में उनको शिव के अवतार के रूप में देखा जाता है। गोरखनाथ की परम्परा में नेपाल के एक प्रखण्ड़ दांग के राजकुमार रतनपरीक्षक के नाथयोग में दीक्षित किया गया था। नाथ परम्परा में रतनपरीक्षक को सिद्ध हाजी के नाम से जाना जाता है। (सिंह, 2022, साक्षात्कार) नेपाल के विभिन्न्न लोगों से बातचीत करते हुए इस सम्बन्ध में एक अनुश्रुति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हुई। एक बार रत्नपरीक्षक शिकार खेलने वन में गए। वहॉ इस राजकुमार की भेंट जटाविभूषित महायोगी गोरखनाथ से हुई। गोरखनाथ ने राजकुमार को उपदेश देते हुए कहा कि हर एक प्राणी की सृष्टि परमात्मा के द्वारा ही की गई है तथा उसके प्राण पर एकमात्र नियंत्रण उसका ही है। उन्होने राजकुमार से कहा कि यदि शिकार खेलना चाहते हो तो, अपने मनरूपी मृग का वध करो, जो कि अत्यन्त चंचल है, न तो उसके वक्षस्थल है, न रक्त मांस है, न चोंच है तथा न ही पांव है। महायोगी की यह वाणी सुनकर रत्नपरीक्षक अत्यंत प्रभावित हुआ तथा गुरू गोरखनाथ से दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के दौरान गोरखनाथ ने उन्हे अमृतपात्र प्रदान किया। यह अमृत कलश वर्तमान समय में भी एक मंदिर में उपस्थित है।

नेपाली जनजीवन पर गुरू गोरखनाथ का प्रभाव अनेक स्तरों पर दिखाई देता है। राजपरिवार के साथ साथ सामान्य जनमानस ने गोरखनाथ को अपने पथप्रदर्शक के रूप में देखा। उनके विराट व्यक्तित्व से प्रभावित नेपाल में गोरखा जाति, गोरखा जिला अपना सम्बन्ध महायोगी गोरखनाथ से ही मानती है। इस प्रकार परम्परागत रूप से नेपाली जनमानस का जुड़ाव गोरखनाथ से आध्यात्मिक स्तर पर दिखाई देता है।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में ही गोरखनाथ जी का एक और मंदिर स्थापित है, जिसमें गोरखनाथ जी के बाल स्वरुप का दर्शन होता है। बागमती नदी के किनारे मत्स्येंद्रनाथ जी का मंदिर अवस्थित है। नेपाल के प्रसिद्व क्षेत्र मृगस्थली में गोरखनाथ जी का एक दिव्य मंदिर स्थित है। कान्तीपुर तुलजा मंदिर मत्स्येंद्रनाथ को समर्पित है। नेपाल में कान्तीपुर क्षेत्र में नीलवती, शीलवती तथा पूर्ववती नदियो के संगम पर कैलाश के ऊपर तीन चरण कमल विद्यमान है। यह चरण श्री मत्स्येंद्रनाथ, गुरु गोरखनाथ तथा श्री दण्डपाणि के माने जाते है। इसी प्रकार दांग क्षेत्र में सिद्वरतनाथ तथा सिद्व भगवन्तनाथ का मठ स्थित है। (मित्तल, 2015, 13)

शाही राजवंश की गुरू गोरखनाथ के प्रति समर्पण को कुछ परम्पराओ से समझा जा सकता है। शाह वंश के राजाओं का राजतिलक गुरू गोरखनाथ की तपोभूमि मृगस्थली के महन्त के द्वारा ही सम्पन्न होता था। शाही वंश के शासकों के द्वारा सिक्कों पर गुरू गोरखनाथ की चरणपादुकाओं का चिन्ह अंकित कराया गया तथा उन पर श्री श्री गोरखनाथ लेख उत्कीर्ण करवाया गया। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि किसी भी राष्ट्र की मुद्रा उसकी संप्रभुता का सूचक होती है तथा उस पर अंकित चिन्ह जनता द्वारा स्वीकृत राजा अथवा देवता का चित्र उत्कीर्ण करने की परम्परा रही है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि शाही वंश की समाप्ति के पश्चात भी वर्तमान नेपाली मुद्राओं पर गुरू गोरखनाथ द्वारा पृथ्वीशाह को प्रदान किए गए कटार की अनुकृति तथा श्री भवानी तथा श्री श्री गोरखनाथ नाम का अंकन मिलता है, जो कि वर्तमान नेपाली समाज में गुरू गोरखनाथ की प्रतिष्ठा का द्योतक है। (नरहरिनाथ, 1968, 82)

नेपाल की संत परम्परा में योगी नरहरिनाथ को गोरखनाथ परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। इनका पूर्व नाम हरिकसेन थापा मिलता है। इनके पिता ललित सिंह तथा माता का नाम गौरा देवी था। इनका जन्म 1915 ई0 में नेपाल के कालीकोट जिलें मे हुआ था। आठ वर्ष की अवस्था में यह भारत चले आए तथा संस्कृत भाषा सीखी। यह हिन्दू धर्म के भरद्वाज गोत्र के अन्तर्गत आते थे। इन्होने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा 1942 के भारत छोडो आन्दोलन के

दौरान महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। वाराणसी में अपने प्रवास के दौरान इन्होने विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्वार के लिए प्रयास किया। यह नेपाल के प्रसि़द्व इतिहासकार एवं लेखक माने जाते है, जिन्होने 28 विभिन्न भाषाओं में 600 से अधिक पुस्तके लिखी। बाद में वे गोरखपंथ की परम्परा से जुड़ गए तथा पाशुपति मंदिर के पास मृगस्थली में निवास करने लगे। 2003 ई0 में इनकी मृत्यु हो गई। योगी नरहरिनाथ ने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान क्रान्तिकारी भूमिका का निर्वाहन किया। वाराणसी के प्रसिद्ध इनके द्वारा गोरखा वंशावली, योगी वंशावली, देवमाला वंशावली जैसी अनेक वंशावलियों पर कार्य किया। इन्होने डांग में नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी करपात्री महाराज ने इनकों पाशुपति चलना की उपाधि प्रदान की थी। (मित्तल, 2015, 89)

दांग में सिद्ध रतननाथ का प्रसिद्ध मठ है। रतननाथ इस क्षेत्र. के राजकुमार थे, जो गुरू गोरखननाथ से प्रभावित होकर नाथपंथ में दीक्षित हुए थे। इनकों नेपाल में नाथ पंथ का एक यशस्वी योगी माना जाता है। इनके द्वारा नाथपंथ का प्रचार नेपाल, भारत, अफगानिस्तान, खुरासान, मुल्तान इत्यादि क्षेत्रों मे किया। बड़ी संख्या में मुलसमान इनके शिष्य बने। इनके सम्बन्ध में मान्यता है कि इन्होने मक्का मदीना की यात्रा की थी। दांग क्षेत्र में स्थित इनका मंदिर पश्चिमी नेपाल के योगियों के लिए महत्वपूर्ण केन्द्र है। पीर रतननाथ की सवारी पात्र देवता पूजन के लिए प्रतिवर्ष चौत्र नवरात्र में भारत के बलरामपुर स्थित देवीपाटन मंदिर में आती है। (दैनिक जागरण, 2021, 4) पश्चिमी नेपाल में पालपा नामक स्थान पर भैरवनाथ जी की पीठ स्थापित है, जिसे अत्यधिक पुण्य क्षेत्र माना जाता है। इसी प्रकार दांग क्षेत्र में सिद्वरतनाथ तथा सिद्व भगवन्तनाथ का मठ स्थित है। यहाँ पर गुरु गोरखनाथ एवं भैरवनाथ जी की विशेष रुप से पूजा की जाती है।

नेपाल में स्थित इन विभिन्न तीर्थस्थानों से नेपाल के सांस्कृतिक जनजीवन में नाथपंथ के प्रभाव को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। नाथ परम्परा के मत्स्येंद्रनाथ, गोरखनाथ तथा सिद्ध रतननाथ को नेपाल में अपूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त होती रही है तथा इनकी पूजा देवता के रूप में की जाती है। नेपाल के विभिन्न कंदराओं, गॉवों एवं जंगलों में भ्रमण करते समय इस बात का एहसास होता है कि नाथपंथ एवं उनकी योग क्रियाओं का प्रभुत्व इन सभी स्थानों पर व्यापक रूप में दिखाई देता है।

भारत एवं नेपाल के मध्य के सम्बन्धों के निर्धारण में नाथ पंथ की भूमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। नेपाल के जनमानस में गुरु गोरखनाथ, गुरु मत्स्येंद्रनाथ का प्रभाव अतीत से वर्तमान समय तक अनवरत रुप से क्रियाशील है। नेपाल मे श्रीगोरखनाथ जी शिवगोरक्ष के रुप में पूज्य है। ऐसी मान्यता है कि पाशुपतिनाथ जी का मंदिर शिवगोरक्ष का ही मंदिर है। उन्होने अपनी तपस्या एवं साधना से नेपाली जनजीवन को प्रभावित किया। नेपाल का गोरखा राज्य एवं गोरखा जाति अपना सम्बन्ध महायोगी गोरखनाथ से ही मानती है। राष्ट्रगुरू के रूप में गुरू गोरखनाथ को नेपाल में प्रतिष्ठित किया गया है। (योगवाणी, 1984, 22) नेपाल की संप्रभुता के प्रतीक मुद्रा पर गुरू गोरखनाथ का प्रतीक अंकित है।

गोरखनाथ के नामानुरूप नेपाल मे गोरखा रेजीमेन्ट का गठान 24 अप्रैल 1815 को किया गया था। सैन्य क्षेत्र में इस रेजीमेन्ट का एक शानदार इतिहास रहा है। इस रेजीमेन्ट के गठन के पूर्व गोरख सैनिक अपनी लडाकू प्रवृत्ति के लिए जाने जाते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अनेक महत्वपूर्ण विजयो में गोरखा सैनिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आंग्ल सिक्ख युद्ध, आंग्ल अफगान युद्ध तथा 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय इस रेजीमेन्ट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोरखा सैनिक नेपाल के अतिरिक्त भारत एवं बिट्रेन की सेनाओं में अपनी सेवा दे रही है। वर्तमान समय में भारतीय सेना में सात गोरख रेजीमेन्ट कार्य कर रही है, जिसमें 120000 गोरखा सैनिक है। यह एक बहादुर प्रजाति है, जिसके किस्सें हर स्थान पर सुनने को मिलते है। भारत के अनेक स्थानों पर उनके निडर चरित्र के कारण उनको बहादुर कह कर सम्बोधित किया जाता है। वर्तमान समय में भारत के लखनऊ, वाराणसी, सुबातु तथा शिंलाग में गोरखा ट्रेनिंग सेंटर कार्य कर रहे है। इसके अतिरिक्त गोरखपुर में गोरखा रेजीमेन्ट में भर्ती का एक बड़ा केन्द्र है। (सिंह, 2022, साक्षात्कार) नेपाल की सेनाएँ युद्धभूमि में जय गोरख रणघोष करते हुए युद्ध के लिए प्रस्थान करती रही है।

गोरखा सैनिकों के सम्बन्ध में भारतीय सेनाध्यक्ष सैम मानेकशॉ ने कहा था कि अगर कोई शख्स कहता है कि उसे मौत से डर नही लगता, तो या तो वह झूठ बोलता है या फिर वह गोरखा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज गवर्नर गोरखनाथ मंदिर आए तथा महन्त दिग्विजयनाथ को आभार निवेदित किया। युद्ध स्थिति के अतिरिक्त सामान्य अवस्था में भी गोरखा अपने आस पास होने वाले अत्याचारों एवं अपराधों को कभी भी सहन नही करता। नेपाल का बहुत बड़ा क्षेत्र गोरखनाथ के नाम, तपस्थली एंव महिमा से प्रभावित है।

गोरखनाथ मंदिर के सचिव द्वरिका तिवारी नेपाल एवं गोरखनाथ मंदिर के सम्बन्ध में कहते है कि नेपाल से गोरक्षपीठ का सम्बन्ध सैकड़ों वर्ष पुराना है। नेपाल के राजा एवं रानी गोरखनाथ मंदिर आकर गुरू गोरखनाथ का दर्शन एवं पूजा करते रहे है। गोरखपुर में मकर संक्रान्ति के दिन गोरखनाथ मंदिर के मेलें में आज भी पहली खिचड़ी नेपाल के राजपरिवार की चढ़ती है। एक माह तक चलने वाले इस खिचड़ी मेले में बड़ी संख्या मे नेपाली श्रद्धालु गोरखपुर आते है। खिचड़ी के पश्चात पूजा पाठ करके यहॉ से जाते है। नेपाल के राजपरिवार में यह परम्परा इसलिए है कि गोरखनाथ ने नेपाल के

राजपरिवार को आशीर्वाद दिया था। नेपाली राजवंश एवं गोरखनाथ के सम्बन्धों को इस बात से समझा जा सकता है कि गुरू गोरक्षनाथ की चरण पादुका को नेपाल के राजपरिवार ने अपने राजमुकुट में स्थान प्रदान किया था। नेपाल एवं भारत के सम्बन्धों में प्रगाढ़ता बनाए रखने में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूत्र है, वह है गुरू गोरखनाथ एवं उनका नाथपंथ। ये वो सूत्र है, जिनमें बंधकर नेपाल की जनता तथा वहॉ का शासक वर्ग भारत से अलग होने के विषय में सोच नही सकते है। (तिवारी, 2022, साक्षात्कार)

भारत एवं नेपाल दोनो ही संप्रभु राष्ट्र है, लेकिन दोनो एक दूसरे के पूरक है। ऐसे पूरक जो एक दूसरे के हित अहित की अवहेलना करके कोई भी निर्णय नही ले सकते है। यही दोनों से कोई भी इस प्रकार की गलती करता है, तो उसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। वह आगे कहते है कि सांस्कृतिक सम्बन्ध ही वह मूल सूत्र है, जिसके आधार पर दोनो देशों को आगे बढ़ना होगा। समान संस्कृति एवं शताब्दियों से चले आ रहे राजनीतिक सम्बन्ध ही दोनों देशों को एकजुट रखने में संभव है। (राव, 2018, व्याख्यानमाला)

गुरू गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य डॉ0 रोहित मिश्र नेपाल में गुरू गोरखनाथ एवं राजवंश के सम्बन्धों पर कहते है कि नेपाल के राजा के राजमहल के पास ही गुरू गोरखनाथ की गुफा स्थित थी। उस समय के राजा ने अपने पुत्र राजकुमार पृथ्वीनारायण शाह से कहा कि यदि कभी गुफा में जाओं तो वहॉ के योगी जो भी मांगे उसे न मत कहना। एक दिन पृथ्वीनारायण शाह वहॉ चले गए, वहॉ के गुरू ने उनसे दही मांग लिया। राजकुमार अपने माता पिता के साथ जब दही लेकर गए, तो गुरू ने दही का आचमन कर युवराज के हाथ में उलटी कर दी तथा उसे पीने के लिए कहा। परन्तु युवराज से दही उनके पैरों में गिर गई। बालक को निर्दोष मानकर नेपाल के एकीकरण का वरदान गुरू के द्वारा दिया गया। बाद में इसी युवराज के द्वारा नेपाल का एकीकरण किया गया। तभी से नेपाल के लोगों के लिए बाबा गोरखनाथ उनके लिए आराध्य है। राजपरिवार के द्वारा खिचड़ी चढ़ाने की परम्परा तभी से मानी जाती है, जो कि वर्तमान समय तक चली आ रही है। मंदिर प्रबन्धन के द्वारा बाद में इसमें एक परम्परा और जोड़ दी गई कि शाही परिवार से खिचड़ी आने के बाद अगले दिन मंदिर की तरफ से विशेष रूप से तैयार किया गया महारोट का प्रसाद शाही परिवार को भेजा जाता है। यह प्रसाद नाथ पंथ के योगियों के द्वारा स्वयं तैयार किया जाता है। (मिश्र, 2018, व्याख्यानमाला)

2006 में नेपाल में राजशाही के समाप्त होने के पश्चात वहॉ की सरकारों के द्वारा चीन के प्रभाव में अनेक कार्य किए, परन्तु वह नेपाली जनमानस के मन से गुरू गोरखनाथ को नही निकाल पाई। नेपाली करेन्सी से गुरू गोरखनाथ का चित्र तथा उनकी चरण पादुका को हटा दिया गया, परन्तु नेपाल का एकीकरण करने वाले महाराणा पृथ्वीनारायण शाह को दी कटार का प्रतीक हटाने का साहस नही कर पाए। नेपाल के प्रत्येक कोने में गुरू गोरखनाथ तथा उनके गुरू मत्स्येंद्रनाथ की कहानियाँ प्रचलित है। भारत की आजादी के बाद भारत सरकार ने तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ के सहयोग से महाराजधिराज त्रिभुवन को नेपाल के शासक के रूप में मान्यता दी। आज भी नेपाली शाही परिवार गुरू गोरखनाथ को अपना राजगुरू मानता है। इसी का प्रभाव है कि शासक वर्ग भले ही चीन की भाषा बोले परन्तु नेपाल की जनता सदैव भारत के स्वर में ही स्वर मिलाकर बोलती है। (सिंह, 2022, साक्षात्कार)

उत्तराखण्ड़ नेपाल की सीमा से लगा हुआ एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। दोनो के मध्य सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तर पर अनेक प्रकार की साझा संस्कृति का विकास हुआ है। गोरखनाथ के अतिरिक्त गोरखपंथ से जुड़े हुए बहुत से आप्तपुरूषों को दोनो क्षेत्रों में समान रूप से महत्व दिया जाता है। चम्पावत में डयुरी नामक एक छोटे से गांव में रीठा साहब गुरूद्वारा अथवा मीठा रीठा साहिब स्थित है। इस गुरूद्वारें को सिक्ख संप्रदाय में अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इस गुरूद्वारे का निर्माण 1960 में लोदिया एवं रतिया नदी के संगम पर करवाया गया था। इस स्थल के सम्बन्ध में मान्यता है कि गुरू नानक जी गोरखपंथी जोगी से धार्मिक एवं आध्यात्मिक चर्चा के लिए यहॉ पर आए थे। यह स्थल एक विशेष तरह के मीठे रीठा फल के पेड़ों के लिए जाना जाता है। इस गुरूद्वारे के निकट ढ़ेरनाथ का मंदिर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि 1501 ई0 में गुरू नानक देव अपने शिष्य बाला एवं मरदाना के साथ यहॉ पर आए थे। इस दौरान गुरू नानक की मुलाकात गुरू गोरखनाथ के शिष्य ढ़ेरनाथ के साथ हुई थी। दोनों गुरूओं के मध्य संवाद के दौरान मरदाना को भूख लगी तो उन्होने नानक जी से कुछ खाने के लिए मागा। गुरू नानक ने पास के रीठा के पेड से फल तोडकर खाने के लिए दिया। यद्यपि यह फल बहुत कडुवा होता है, परन्तु नानक की दिव्य दृष्टि से यह मीठा हो गया। (कुकरेती, 2019, 178) इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में नेपाल के भक्त आते है।

चम्पावत के बिसुड़. के फड़त्यालों का इष्टदेव ढेरनाथ को माना जाता है। इनका मंदिर डुंगरी फड़त्याल गांव के निकट एक टीले पर देवदारू के वृक्षों के मध्य स्थित है। इस मंदिर के पास ही पूर्व दिशा में पानी का एक नौला भी है। यह स्थान बड़ा ही रमणीक है। ढेरनाथ एक गोरखपंथी सिद्ध थे। इनका प्रभाव इस क्षेत्र में व्यापक रूप से दिखाई देता है। ढेरनाथ का मंदिर लोधिया घाटी में गुरूद्वारा रीठा साहिब की चहारदीवारी से सटा हुआ है। यह मंदिर तीन तरफ से गुरूद्वारे से घिरा हुआ है।

कुमाऊँ क्षेत्र में स्थानीय देवता के रूप में गंगानाथ को अत्यधिक प्रसिद्वि प्राप्त है। गंगानाथ का सम्बन्ध नेपाल से माना जाता है, जहॉ उनका जन्म डोटीगढ़ नामक राज्य में हुआ था। इनके पिता वैभवचन्द्र तथा माता का नाम प्यूला देवी मिलता है।

इनका जन्म शिव की आराधना से माना जाता है। इस बालक का नाम गंगाचन्द्र रखा गया। उसके अद्वितीय क्रियाकलापों से सिद्ध हो गया था कि वह सामान्य बालक नही है। गंगानाथ को प्रतिदिन स्वप्न में अल्मोडा जोशीखोला की कन्या भाना बुलाती है। अपने इस स्वप्न की वजह से वह बहुत परेशान हो गए। भाना उसकों स्वप्न में आकर कहती कि ज्यूंन मै को च्यल हौले, जोशी खोला आले। मरी माँ को च्यल हैले, डोटी पड़ी रोले।। इस स्वप्न के पश्चात गंगाचन्द्र की नींद खुल जाती। एक रात सब कुछ छोड़कर अपने सवालों का उत्तर जानने के लिए भटकतें हुए काली नदी के पास पहुँच जाते है। गुरू गोरखनाथ से शिक्षा दीक्षा पाकर वह अपने राज्य नेपाल वापस पहुँचकर अपनी माता से भिक्षाटन करते है। कुछ समय पश्चात वह काली नदी पार कर वर्तमान चंपावत जिले में आते है। विभिन्न क्षेत्रां में घूमते घूमते गंगानाथ जोशीखोला पहुँच गए तथा वहॉ के लोगो को बताया कि वह नेपाल डोटी राज्य के राजकुमार गंगाचन्द्र है। वह भाना के स्वप्न आमंत्रण पर उसको ढूढने के लिए दर दर भटक रहे है। महिलाओं ने कहा कि भाना आपका इन्तजार एक लम्बें समय से कर रही है। यह सुनकर गंगानाथ उन महिलाओं से भाना के गाँव का रास्ता पूछतें है। गंगानाथ को देखकर भाना की आँखों में चमक आ जाती है। दोनों प्रेमियो का मिलन हो जाता है। गंगानाथ दन्या जोशिखोला के पास कुटिया बनाकर रहने लगते है। धीरे धीरे गंगानाथ एवं भाना के प्रेम के खबर सारे गाँव को हो जाती है। भाना के पिता अथवा ससुर इस राज्य के दीवान को जब इस बात की जानकारी हुई तो गंगानाथ को मारने की एक योजना बनाई। उनकों पता था कि गंगानाथ के पास गुरू गोरखनाथ के दिए हुए दिव्य वस्त्र तथा भगवान गोरिया द्वारा दी गई दिव्य शक्तियाँ है। वह छल से उनकी हत्या करना चाहते है। होली के दिन छल से गंगानाथ को भांग पिला देते है। अत्यधिक भांग पीने के कारण वह बेसुध हो जाते है। इसी समय दीवान किशनजोशी तथा उनके सेवक गंगानाथ का दिव्य वस्त्र निकाल कर उनकी हत्या कर देते है। (जोशी, 2015, 76) यह कथा मूल रूप से उत्तराखण्ड़ एवं नेपाल के मध्य के सांस्कृ तिक सम्बन्धो को व्यक्त करती है।

उत्तराखण्ड के चम्पावत में मंच तामली में एक गोरक्षपीठ स्थित है, जिसके सम्बन्ध में मान्यता है कि सतयुग से यहॉ पर अखड़ धूनी अनवरत प्रज्जवलित हो रही है। चम्पावत क्षेत्र में स्थापित गुरू गोरखनाथ मंदिर आध्यात्मिक पीठ के रूप में सम्पूर्ण उत्तर भारत तथा नेपाल में प्रमुख स्थान रखती है। इस स्थान पर बड़ी संख्या में नेपाली श्रद्धालु आते है तथा अपनी आध्यात्मिक पिपासा की पूर्ति करते है।

वर्तमान भारत नेपाल सम्बन्धों में जिस प्रकार के गतिरोध एवं अविश्वास की भावना का विकास हुआ है, उसके लिए मूल रूप से दोनों देशों के राजनीतिक एवं प्रशासनिक नेतृत्व को उत्तरदाई ठहराया जा सकता है। इनके द्वारा बनाई गई यह नीतियाँ जो कि धर्मनिरपेक्षता की आड में नेपाल के सम्बन्धों को केवल राजनीतिक एवं आर्थिक आधार पर निर्धारित करती है। नेपाल में आज भी गोरखनाथ को अत्यधिक महत्व दिया जाता है तथा नेपाल अपने को गोरखा राज्य के रुप में गौरवान्वित महसूस करता है (द्विवेदी, हजारी प्रसाद, 1968, 31)। यदि आज भी नाथपंथ के सूत्र को पकडकर नीतियों का निर्धारण किया जाए तथा सम्बन्धों का आधार सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक आधार को बनाया जाए तो भारत नेपाल सम्बन्धों में कभी भी अविश्वास की भावना का उद्भव नही होगा। इस प्रकार दोनो देशों के मध्य के आध्यात्मिक एवं सामाजिक जुड़ाव का एक प्रमुख तत्व नाथ संप्रदाय को स्वीकार किया जा सकता है। भारत के उत्तरी हिमालय क्षेत्र की तराई की सामाजिक संरचना भारत एवं नेपाल के मध्य की सदियों से चली आ रही परम्परा के वाहक माने जाते हैं। उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश की जो सीमाएँ नेपाल के साथ साझी होती है, उन क्षेत्रों के मध्य यह सांस्कृ तिक अदान प्रदान अधिक दिखाई देता है। सीमा के दोनो तरफ नाथ संप्रदाय अपने विभिन्न रूपों में जनमानस को प्रभावित करने का कार्य कर रहा है। गोरखपंथ की व्यापकता वैसे तो सम्पूर्ण भारत एवं भारत के बाहर विभिन्न केन्द्रों पर दिखाई देती है, परन्तु उसका मूल उत्तराखण्ड़ व नेपाल में अपने विशिष्ट स्वरूप में प्रदर्शित होता है।

REFERENCES

योगवाणी का श्रीनाथसिद्ध तीर्थस्थल, विशेषांक, वर्ष– 15, अंक 1–3। 3. योगवाणी का नाथसिंद्ध चरित्र विशेषांक, वर्ष– 9, अंक

कुकरेती, विष्णुदत्त, नाथपंथ गढ़वाल के परिप्रेक्ष्य में, श्री गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर, उ0प्र0

द्विवेदी, हजारी प्रसाद, (1968) *नाथसिद्धों की बानियाँ,* काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1968, पृ0 सं0 31

मिश्र, रोहित (2018) गुरू गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य, व्याख्यानमाला, गोरखपुर

मित्तल, सतीश चन्द्र, भारत नेपाल सम्बन्ध एक सिंहावलोकन, *शोध संचयन* भारत नेपाल सम्बन्ध विशेषांक, वाल्यूम–6

मित्तल, सतीश चन्द्र, भारत नेपाल सम्बन्ध एक सिंहावलोकन, *शोध संचयन* भारत नेपाल सम्बन्ध विशेषांक, वाल्यूम

विद्यालंकार, सत्यकेतु, *मौर्य साम्राज्य का इतिहास,* श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली

तिवारी, द्वारिका, सचिव, गोरक्षपीठ पीठ, गोरखपुर, साक्षात्कार

सिंह, पद्मजा, असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से साक्षात्कार।

राघव, रांगेय, (2017) *गोरखनाथ और उनका युग,* आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली,, पृ0 स0, 24

राव, प्रदीप, भारत नेपाल सम्बन्ध में व्याख्यानमाला, 2018, गोरखपुर

उपाध्याय, बलदेव, (1999) विश्वभारती पत्रिका, आषाढ़, विक्रम संवत

दैनिक जागरण, दैनिक पत्र, वाराणसी, 2021

जोशी डॉ0 प्रयाग, *कुमाऊँनी लोकगाथाएँ,* भाग 1, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, संस्करण

नरहरिनाथ, योगी, *देवभूमि भारत एवं आध्यात्मिक नेपाल,* भाग 1, गोरखपुर मृगस्थली, काठमाण्डू नेपाल